श्री कल्लोसती दादी चरित्र मानस

"श्री कल्लोसती दादी चरित्र मानस"

⛳⛳⛳⛳⛳⛳⛳⛳

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

🚩🚩🚩🚩🚩🚩🚩🚩

प्रथम निमंत्रण गणपती, आन पधारो आप ।
कुलसती कथा चरित्र में, आय विराजो आप ।।

बुद्धि दो मां शारदे, करूँ तुम्हे प्रणाम ।
दादी जीवन लिख सकूँ, ऐसा देना ज्ञान ।।

प्रथम गुरु हैं मात पिता सादर शीश नवाय ।
मन इच्छा पूरी होवे, थारी कृपा जो जाय ।।

आदर से गुरु चरण पड़ूँ, गुरुवर को सम्मान ।
शिष्य आपका हूँ प्रभू, रखना मेरा मान ।।

कैलाश में महादेव विराजें, संग पार्वती मात ।
तुम्हें ध्यान कर लिखा रहा, सती महिमा की बात ।।

क्षीर सागर से आज पधारो, त्रिवभुवन दीनानाथ ।
मात लक्ष्मी आप विराजो, विष्णु जी के साथ ।।

बालाजी थे राम के दास, म्हें भी थारा दास ।
दादी के इस दास की, पूरण होवे आस ।।

सकराय में वास तेरा, हे कुलदेवी मात ।
रखियो कुल की लाज सदा, हे शाकम्बरी मात ।।

नहीं हारते भक्त तेरे, करते भव से पार ।
मेरा सहारा भी बनों, खाटू के सरकार ।।

राणी सती दादी कहूँ, तुमको मन में ध्याय ।
मेरो काज संवारियो, खुद आकर के माय ।।

घर का देव पित्तर पित्तराणी, नमन करूँ सिर नाय ।
आड़े आ करियो कृपा, अपने कुल के माय ।।

समस्त देव का ध्यान धरूँ, करता उन्हें प्रणाम ।
लिखता सती चरित्र को, लेकर देवन नाम ।।

सत की महिमा आज कहूँ, कल्लो सती धर ध्यान।
जीवन चरित्र कह सकूँ, ऐसा दो वरदान ।।

शेखावटी की भूमि में, करते खेमका निवास ।
करते थे व्यापर वहां, सुख सम्पति का वास ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

ख्याति चारों ओर थी, डंका चारों ओर ।
प्रभु सेवा रहते मगन, सकल सदस्य कर जोर ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

मरु की भूमी में रहा, सदा सतियों का जोर ।
कण कण में है वास वहां, सत है चारों ओर ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

रेवती गांव में रहता था, सुखी खेमका परिवार ।
थी प्रभु सेवा की लगन, था विश्वास अपार ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

कथा कहूँ मैं आज जो, है वो पुरानी बात ।
कई सदियों पहले घटी, सत्य सुनो थे बात।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

लगभग चार सौ साल से, भी है पुरानी बात ।
दादी का सत जाग गया, ग्राम जीलो के पास ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

कथा कहूँ शुरुवात से, दादी जी को ध्याय ।
भूल चूक सब माफ कर, कल्लो सती जी आय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

नाम पिता कैलाश था, माता दीना बाई ।
करते प्रभु सुमिरन सदा, दोनों चित्त लगाई ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

बैसाख का माह था, शुभ मंगल का दिन ।
नवमीं तिथी पवित्र थी, उत्सव जैसा दिन ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

सुंदर कन्या ने जन्म लिया, पिता भये विभोर ।
नयनन से आंसू झरे, मंगल चारों ओर।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

मुखड़ा चमके चांद सा, फैला वहां प्रकाश ।
घर के सब हो गए चकित, देख कन्या है खास ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

कोई बजाए थाल तो, कोई करे फिर नाच ।
घर वाले सब खुशी मनाएं, नाच नाच के आज ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

कोई मीठा मुह करे, कोई करे उल्लास ।
सारे गांव में फैल गया, इस कन्या का प्रकाश ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

आते नर और नारी हैं, देखन सारे लोग।
मुख चमके है देवी सा, कहते सारे लोग ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

जोशी जी को खबर हुई, हुआ नाम संस्कार ।
सारी कला से युक्त है, कलावती हो नाम ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

बनी जन्म की पत्रिका, जब जोशी जी के हाथ ।
कहते नहीं थकते वहां, फैलेगा सुप्रकाश ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

ग्रह नक्षत्र इसके प्रबल, जैसे देव समान ।
सत की राह में जाएगी, बढ़ेये कुल का मान ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

खूब मना उत्सव जनम, सबको जाय बुलाए ।
सकल गांव के लोग पधारे, उनके घर मे आय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

धीरे धीरे समय गया, हुई पांच की आय ।
गुरुकुल को बाई चली, विद्या पढ़ने जाय।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

थी कन्या वो बड़ी कुशल, रुचि ले पढ़ती पाठ ।
जल्दी ही फिर सीख लिया, हर विषयों का पाठ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

गुरु की थी आज्ञाकारी, प्रभु में रहती लीन ।
शिक्षा पूरी देय के, विदा किया है दीन्ह ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

कन्या भई किशोर जब, मात कहे पति जाय ।
वर ढूंढो कन्या हिते, दूत पठाओ जाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

भेजे दूत अनेक फिर, वर ढूंढन को जाय ।
सुंदर सुयोग्य वर ढूंढ़ कर, खबर कराई जाए ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

गए दूत पंहुचे नगर, नारनोल के माय।
सुंदर पुष्ट शरीर है, गौर वर्ण है काय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

नाम कल्याण दास है, प्रभु सेवा में मगन।
बात चली विवाह की, पक्का हुआ लगन ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

आय दूत फिर खबर करी, पितु को जाय बताये ।
करें तैयारी ब्याह की, ऐसा दीन्ह बताए ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

सुनी माता फिर भई प्रसन्न, प्रभु को शीश नवाय ।
जा पति से कहने लगी, करो तैयारी जाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

आई मंगल शुभ घड़ी, द्वारे आई बरात ।
हाथी घोड़े पालकी, ले कर आये साथ ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

खूब करी अगवानी वहां, समधी गले लगाए।
तोरण दीन्हा मार फिर, वरमाला को जाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

भांति भांति के भोज बने, नए नए पकवान ।
खूब करी खतीरी वहां, सबका बढ़ाये मान ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

फेरे पड़ने लग गए, शुभ बेला में जाय ।
कन्या हुई पराई फिर, अश्रु बहते जाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

आई बेला कठिन हुई , सबके मन भर आय।
बिटिया कैसे करूँ विदा, हृदय फटता जाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

मात क्रंदन खूब करे, पिता नयन में नीर ।
बैठा दिया फिर डोली में, कलेजे उतरी पीर ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

आकर समधी गले लागये, और बंधाये धीर ।
बेटी सी वो राज करे, वचन दिए गम्भीर ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

डोली पँहुची नारनौल, अपने पति के धाम ।
खूब किया स्वागत वहां, कुशल हुए सब काम ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

सास ससुर की सेवा में, बिता बरस सुखाये ।
धन्य भये ससुराल में, सबके मन हरषाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

वर्ष एक जब बीत गया, सुंदर पुत्र खिलाए ।
नगर निमंत्रण तब भया, मंगल मोद कराए ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

बालक हुआ जब पांच का, बाई थी अपने धाम ।
जाना था फिर सासरे, अपने पति के धाम ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

करी तैयारी जाने की, कई गाड़ी को लागये ।
विदा किया तब बाई को, अपने दूत पठाये ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

चली बाई फिर सासरे, पति का चित्त समाये ।
पँहुची जीलो ग्राम तक, मन विचलित हो आय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

मन मे शंका घनी हुई, पति का ध्यान लगाये।
व्याकुल मन कुछ कह रहा, हुई अनहोनी जाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

गाड़ी से उतरी तुरत, बैठी चित्त लागये ।
मन को तब सूचना मिली, पति बैकुंठ समाए ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

बिना पति के कुछ नही, सूना सब संसार।
जीवन उनके बिन नहीं, अब तो जिया न जाय।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

सत की महिमा हुई प्रकट, हुया पती आभास ।
गाड़ीवान से तब कहा, उसको बुला के पास ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

पति सिधारे बैकुंठ को, हमको जाना साथ ।
चिता करो तैयार तुम, हमको जाना साथ ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

गाडीवान समझा नही, भय से काँपा जाय ।
हाथ जोडकर तब कहा, कुछ न समझ में आय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

हाथ पैर कांपने लगे, गला गया फिर रुँध ।
रोते रोते मात से, करे विनय भरपूर ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

समझाये फिर मात उसे, चिंता कोई नाही ।
करो प्रबंध तुम चिता का, पति संग जाय समाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

भारी मन से वो गया, करने सारे प्रबंध ।
ले आया एक ब्राह्मण को, वो अपने फिर संग ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

ब्राह्मण ने कुछ कहा बुरा, पास मात के आय ।
खाती देखता सब रहा, कहा मात से जाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

तैयारी मैं करूँ सभी, बात आपकी मान ।
जैसा फिर आदेश हो, राखूं उसका मान ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

चिता हुई तैयार शुभ, कुछ पल में फिर जाय ।
मन मे परीक्षा लेने की, बात गई समाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

बोला खाती मात से, अग्नि नहीं ला पाय ।
बोली बाई खाती से, गाड़ी तक वो जाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

उठा चका तू गाड़ी का, अग्नि वहीं मिल जाय ।
खाती कहना मानकर, पहुंचा गाड़ी के माय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

जैसे पंहुचा गाड़ी तक, सत फिर तेज दिखाए ।
जैसे ही चका उठाया, अग्नि प्रज्वलित पाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

नमन किया फिर मात को, नैन भरे संकोच ।
गलती हुई परखा उन्हें, मन में भारी बोझ ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

प्रथम किया स्नान फिर, पूज चिता को मात ।
बैठ गई फिर मात चिता में, पति का चित्त समाय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

मेघन ने गर्जना की, बरसाते वो फूल ।
सब देवन जय कार करी, सबने चढ़ाए फूल ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

सत का तेज समाय फिर, गई अग्नि में समाई ।
मन इच्छा पूरी हुई, पति प्राणों में समाई ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

ब्राह्मण सब कुछ देख रहा, सिर पटक कर रोय,
भई ग्लानि मन मे उसे, श्रीफल भेंट चढ़ाय।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

उसकी भेंट की नहीं, दादी ने स्वीकार ,
रुष्ट होय के मात ने प्रतिबंध, दियो लगाये ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

सती हो मां प्रकट भई, देने आशीष आय ।
खाती को वरदान दिया, सकल जगत के माय ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

बाल विधवा न हो कोई, तेरे कुल की ब्याही ।
पास रहो मेरे सदा, करूँ सदा सुखदाई ।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

सुधीर को दे प्रेरणा, गाथा लिखवाई मात।
धन्य धन्य मैं हो गया, सकल समस्त परिवार।।

संवत दो हजार पचहत्तर, भादों बदि नवमी के शुभ दिन ।
सायं काल की पावन बेला, लिख पाया तेरा मंगल परिचय ।।

कृपा करो दादी सदा, अपने भगत पर आय ।
जो इस मंगल को पढ़े, आशीष तेरा पाय ।।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

कहती दादी भक्त से, खुश हो करके आज।
जो भक्त इसका पाठ करें, सकल सवारूँ काज ।।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

कथा करूँ सम्पन्न मैं, कल्लो सती चित लाय ।
रखना सदा हृदय में हमे, हे कल्लो सती माय ।।
नमन करूँ हे मात तुम्हें, विनती करूँ करजोर ।
अपने भक्तों पे सदा, कृपा करो पुरजोर ।।
नमन पुनः करता तुम्हे, कोटि करूँ प्रणाम ।
साथ रहो हरदम सदा, निशदिन आठों याम।।।।

मात श्री कल्लो सती जी की जय।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।
मात श्री कल्लो सती जी की जय।।

श्री कल्लो शक्तिधाम
श्री दादीजी मंदिर , (धोलामण्ड वाली दादी जी)
ग्राम जीलो, नीम का थाना, (राजस्थान)
श्री कल्लो शक्ति धाम ट्रस्ट®

🙏🙏जय दादी की🙏🙏
🚩🚩🚩🚩🚩🚩🚩🚩